आपने लिखा

संदर्भ का अंक 75 और 76 मिला। इनमें प्रकाशित लेखों के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ।

अंक 75 में प्रकाशित लेख 'आयु मिश्रण' द्वारा बच्चों की आयु को लेकर उठने वाले सवालों का जवाब मिला कि हम किस तरह अलग-अलग आयुवर्ग के मिश्रण से सीखने को बेहतर बना सकते हैं। 'प्लेसिबोः यूँ बेअसर ही सही' पढ़कर अपने बारे में सोचने लगी कि हर बार यही तो होता है, डॉक्टर के पास जाना और दवाई लेने से पहले ही ठीक हो जाना। 'कबूतर खाने का सिद्धान्त' दिमाग की हल्की कसरत के लिए अच्छा लेख है। 'लैंगिकता संवाद शिविर' में एक अच्छी कार्यशाला का चित्रण देखने को मिला। हालाँकि, लैंगिकता के मुद्दे पर कई कार्यशालाएँ होती हैं, लेकिन इनमें इस तरह के सवालों (जैसे - अपनी पैदाइश का चित्र बनाओ) पर अक्सर बहुत विचार नहीं किया जाता।

'इंग्लिश रीडर किन मानकों पर खरी' किसी पुस्तक को लेकर बहुत ही अच्छी समीक्षा की गई है। पाठ्यक्रम को वास्तविकता के साथ जोड़ा गया है। लेकिन लेखक ने कहा कि बच्चों से ये पूछे जाने की आवश्यकता नहीं है कि आपने क्या सीख ली। लेकिन मुझे लगता है कि यह पूछा जाना चाहिए क्योंकि इससे हम किसी भी बात को एक उद्देश्य के साथ किसी के सामने रखते हैं। यह बात और है कि सामने वाला इसे किस रूप में लेता है। जब हम सीखने के बारे में सवाल करते हैं तो हर जवाब में कुछ नया सुनने को मिलता है, और सबकी सोच से हमें रू-बरु होने का मौका मिलता है।

संदर्भ के अंक 76 के लेख 'किताबों की जादुई दुनिया में' में बच्चों और किताबों के बीच रिश्ता बनाने का सरल तरीका बताया गया है कि कैसे हम थोड़ी-सी चर्चा करके बच्चों में किताबों के प्रति रुचि पैदा कर सकते हैं। लेख 'कोयला और पेट्रोलियम कहाँ से आए', में कोयला और पेट्रोलियम की उत्पत्ति की प्रक्रिया को सरल भाषा में बताया गया है।

'मेरे प्रिय शिक्षक मिश्रा जी', संस्मरण में एक छात्र और शिक्षक के छुपे हुए रिश्ते को दर्शाता है, जिसमें छात्र के दिल में शिक्षक के प्रति कितना सम्मान है लेकिन संकोचवश वो उन्हें कभी बता नहीं पाया।

'पुस्तकालय', लेख में पुस्तकों को किसी विशेष प्रकार से चिन्हित न किए जाने की वजह दी गई है ताकि हम किसी अच्छी किताब को पढ़ने में सिर्फ इसलिए संकोच या शर्म महसूस न करें कि उस पर विशेष चिन्ह है और उसे चिन्ह के नियमानुसार कुछ लोग ही पढ़ सकते हैं।

तरन्नुम, नई दिल्ली

भूल-सुधार

अंक 77 में प्रकाशित लेख 'परम्परा से पलायन' के लेखक डेविड ग्रिबल के परिचय में उनका निवास ऑस्ट्रेलिया लिखा था। वे वर्तमान समय इंग्लैण्ड में रहते हैं।
अंक 78 के तीसरे और पिछले आवरण के फोटो किशोर पंवार ने खींचे हैं। उनका नाम देना छूट गया था। इन भूलों के लिए हमें खेद हैं।

– सम्पादक मण्डल